फेर फेर इतहीं दौड़त, कहूं ठेकत दौड़त गिरत।
सब सखियां मिल तिन पर, फेर फेर हांसी करत।। ४७ ।।

यहां पर बार-बार दौड़ती हैं, छलांग लगाती हैं और गिरती हैं। फिर आपस में मिलकर एक-दूसरे की हंसी करती हैं।

केते खेल कहूं सखियन के, जो करत बन नित्यान।
खेल करें स्याम स्यामाजी, सखियों खेल अमान।। ४८ ।।

सखियों के खेल का कहां तक बयान करूं जो वनों में रोज ही करती हैं। श्री राजजी, श्री श्यामाजी और सखियां सब मिलकर आनन्द लेते हैं। इसकी उपमा नहीं है।

महामत कहे ऐ मोमिनों, देखो ताल पाल के बन।
ए लीजो तुम दिल में, करत हों रोसन।। ४९ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! अब हौज कौसर के ताल की पाल (पुल, तालाब की मेड़) के ऊपर के वनों की शोभा देखो और अपने दिल में धारण करो। मैं तुमको बताती हूं।

।। प्रकरण ।। ७ ।। चौपाई ।। ४६८ ।।

हौज कौसर ताल जित जोए कौसर मिली

अब कहूं मैं ताल की, अन्दर आए सको सो आओ।
जो होवे रूह अर्स की, फेर ऐसा न पावे दाओ।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे सुन्दरसाथजी! अब मैं हौज कौसर ताल का वर्णन करती हूं। तुम में से जो आ सकते हैं वह मेरे पास अन्दर आ जाओ। जो परमधाम की रूहें हैं उनको ही मैं कहती हूं कि फिर ऐसा समय नहीं मिलेगा।

एक हीरे की पाल है, तिनमें कई मोहोलात।
गिरद द्योहरी कई बन हैं, क्यों कहूं फल फूल पात।। २ ।।

हौज कौसर के ताल की पाल एक हीरे की है। उसमें कई महल बने हैं। चारों तरफ घेरकर एक सौ अट्ठाईस द्योहरियां हैं। कई तरह के वनों की शोभा है जिनके फल, फूल और पत्ती की शोभा कैसे बताऊं?

जब आवत इत अर्स से, चढ़िए इन घाट ताल।
चबूतरे दोए द्योहरी, सीढ़ियां चढ़ते होत खुसाल।। ३ ।।

जब परमधाम से श्री राजश्यामाजी और सखियां आती हैं, तो झुण्ड के झुण्ड द्वार से तालाब पर चढ़ते हैं। यहां दो चबूतरे और दो द्योहरी उनके ऊपर बनी हैं। सीढ़ियां चढ़ते समय इन्हें देखकर बहुत खुशी होती है।

ए जो कही दो द्योहरी, तिन बीच पौरी दोए।
एक आगूं चबूतरा, दूजी आगूं द्योहरी सोए।। ४ ।।

यह जो दो द्योहरी बताई हैं उनके बीच दो मेहराब आई हैं। पहली मेहराब के आगे चबूतरा आया है और दूसरी मेहराब के आगे द्योहरी आई है यह मेहराबें २५० मन्दिर की चौड़ी आई हैं।

Nijanand App

इतथें सीढ़ियां चढ़ती, ऊपर आए पोहोंची किनार।
दोऊ तरफ दोए चबूतरे, बीच चौक खूंटों चार।।५।।

इसके आगे पाल पर जाने के लिए (संक्रमणिका) सीढ़ियां चढ़नी होती हैं। जिससे चढ़कर ऊपर पाल पर पहुंचते हैं। पाल के ऊपर भी दोनों तरफ दो चबूतरे हैं। बीच में उतना ही लम्बा चौड़ा चौक है।

ए बड़ा घाट तरफ अर्स के, फिरते तीन घाट तरफ और।
बने गिरदवाए पाल पर, जुदी जिनसों चारों ठौर।।६।।

यह झुण्ड का बड़ा घाट है। अब हौज कौसर ताल के ऊपर तीन घाट और हैं जो चारों तरफ से पाल पर बने हैं और इनके चारों ठिकानों की अलग-अलग हकीकत है।

ताल बीच टापू बन्यो, मोहोल बन्यो तिन पर।
तिन गिरदवाए जल है, खूबी हौज कहूं क्यों कर।।७।।

हौज कौसर ताल के बीच टापू महल बना है। उसके चारों तरफ जल है। ऐसे हौज कौसर तालाब की खूबी का वर्णन कैसे करूं?

नेक कहूं तिनका बेवरा, चारों तरफ बन पाल।
अव्वल बड़े घाट से, ए जो हौज कौसर कह्या ताल।।८।।

चारों तरफ की पाल तथा वन की शोभा की थोड़ी सी हकीकत बताती हूं। शुरू में झुण्ड के घाट से हौज कौसर तालाब का वर्णन करूंगी।

जो झुन्ड ताल की पाल पर, ऊंचा अतंत है सोए।
फेर आए लग्या भोम सों, इन जुबां सोभा क्यों होए।।९।।

ताल की पाल के ऊपर झुण्ड का घाट पांच भोम छठी चांदनी के बराबर ऊंचा है फिर यहां पर नजर से जमीन पर देखते हैं, तो उसकी सिफत को शब्दों से कैसे वर्णन करूं?

एह झुन्ड है घाट पर, और पाल ऊपर सब बन।
फिरता आया झुन्ड लो, पोहोंच्या पावड़ियों रोसन।।१०।।

इस घाट पर पेड़ों के झुण्ड पाल के ऊपर शोभा देते हैं। फिर घूमकर झुण्ड के घाट में आ जाएं और फिर पाल के ऊपर चलें।

और झुन्ड जो दूसरा, तरफ दाहिनी सोए।
छे छातें सीढ़ियों पर, बांधी मिल कर दोए।।११।।

पेड़ों का दूसरा झुण्ड दाहिनी तरफ है। सीढ़ियों के ऊपर पांच भोम छठी चांदनी है। दोनों तरफ के चबूतरों के ऊपर ऐसी ही एकसी शोभा बनी है।

जो कहे झुन्ड दोऊ तरफ के, दोए दोए चबूतरे किनार।
चौथे हिस्से चबूतरे, हार फिरवली खूंटों चार।।१२।।

दोनों तरफ चबूतरों के ऊपर पेड़ों के जो दो झुण्ड बताए हैं, वह दोनों चबूतरों के किनारों पर लगे हैं। चबूतरा पाल के चौथे हिस्से (२५० मन्दिर) में हैं। उन चबूतरों के चारों खूंटों (छोरों) के ऊपर पेड़ों की हार घेरकर आई हैं।

Nijanand App

चौक बीच आए जब देखिए, दोऊ तरफ बने दोऊ द्वार।
दोए द्वार दोए सीढ़ियों, चौक सोभित अति अपार।। १३ ।।

इन दोनों चबूतरों के बीच खड़े होकर देखें तो चबूतरों के ऊपर दोनों तरफ दो द्वार बने हैं और दो दरवाजे दो सीढ़ियों पर हैं। इनकी शोभा बेशुमार है।

एक एक बाजू चबूतरे के, तिनके हिस्से चार।
दो हिस्से खूंट दो दिवालों, और दो हिस्सों बीच द्वार।। १४ ।।

एक बाजू (तरफ) के चबूतरे के चार भाग करें, दो खूंटों (छोरों) के दो भाग, दो भाग में दरवाजा है, अर्थात् दरवाजा (१२५ मन्दिर का) और दोनों तरफ दो खूंटे (छोरों) ६२ १/२, ६२ १/२ मन्दिर के हैं।

चार खूंने दोए चबूतरे, दोऊ तरफों चौथे हिस्से।
तरफ आठ पेड़ दिवाल ज्यों, सोभा कही न जाए मुख ए।। १५ ।।

चारों कोने के दो चबूतरे हैं और दोनों चबूतरों के चौथे हिस्से में पेड़ों की आठ दीवारें आती हैं इसकी शोभा कही नहीं जाती।

इसी भांत दोऊ चबूतरे, चारों खूंटों पेड़ दिवाल।
जब देखिए बीच चबूतरे, चार द्वार इसी मिसाल।। १६ ।।

इसी तरह से दोनों चबूतरों की चारों खूंटों (छोरों) पर पेड़ की दीवारें हैं। जब चबूतरों के बीच में खड़े होकर देखें तो चार दरवाजे इस तरह से बने हैं।

खूंट आठों दोऊ चबूतरे, और आठों बने द्वार।
सोले दिवालें हुई सबे, सोभा लेत पेड़ों हार।। १७ ।।

चबूतरे के दोनों तरफ आठ खूंटे हैं और आठ ही दरवाजे बने हैं। इस तरह से मिलाकर सोलह दीवारें हो गईं, जिनके किनारे पर पेड़ों की पंक्ति शोभा देती है।

जानों तीनों चौक बराबर, बारे द्वार दिखाई देत।
चार चार द्वार चबूतरे, दो सीढ़ियों पर सोभा लेत।। १८ ।।

इसी तरह से तीनों चौकों (दो चौक दो चबूतरों के, एक चौक दोनों के बीच से आया है) चौक बराबर हैं। इन तीनों में बारह द्वार दिखाई देते हैं, गिनती के दस हैं। चार-चार द्वार एक-एक चबूतरे के हैं और दो सौ पचास मंदिर के दो बड़े मेहराब आए हैं।

दस द्वार हुए हिसाब के, हुए बारे देखन मों।
देखे बीच तीनों चौक से, ए किन मुख खूबी कहों।। १९ ।।

हिसाब से दोनों चबूतरों की और बीच के चौक की दस मेहराबें होती हैं। देखने में बारह दिखाई देती हैं। इस मुख से उसकी खूबी का कहां तक वर्णन करूं?

दोऊ तरफ द्योहरियां पाल पर, पेड़ सीढ़ियों के लगती।
दो सीढ़ी ऊपर आगूं द्वारने, चौक आगूं देत खूबी।। २० ।।

पाल के ऊपर दो द्योहरी आई हैं द्योहरी के एक तरफ पेड़ आए हैं दूसरी तरफ घाट की सीढ़ियां हैं, सीढ़ियों के ऊपर और नीचे एक एक द्वार आया है उसके आगे २५० मन्दिर का लम्बा चौड़ा चौक शोभा देता है।

Nijanand App

एक तरफ एक सीढ़ियों, सामी दूजी के मुकाबिल।
इसी भांत तरफ दूसरी, सोभा कहा कहे इन अकल।। २१ ।।

चबूतरे के एक तरफ की सीढ़ियां दूसरे चबूतरे के सामने आई हैं। इसी तरह दूसरी सभी शोभा एक समान है। इसका यहां की बुद्धि से वर्णन करना सम्भव नहीं है।

एक एक सीढ़ियों पर, तरफ दूसरी पेड़ दिवाल।
तरफ तीसरी पाल पर, चौथी तरफ मोहोल ताल।। २२ ।।

एक दरवाजा सीढ़ी पर, दूसरा पेड़ की तरफ है। तीसरा पाल पर है। चौथा ताल के महलों की तरफ है।

दो द्योहरी सोभा लेत हैं, ताल के खूंटों पर।
द्वार सामी टापूअ के, दोरी बन्ध बराबर।। २३ ।।

ताल के खूंटों के ऊपर दो द्योहरियां शोभा देती हैं। इसके ठीक सामने टापू महल का दरवाजा है जिसके दोनों तरफ दो द्योहरियां शोभा देती हैं। वह दोनों एक लाइन में दोरी बन्ध हैं।

दोऊ तरफों दो द्योहरी, उतरती जल पर।
तिन आगूं दोए चबूतरे, सो आए छात अन्दर।। २४ ।।

दोनों तरफ की द्योहरियों से लगती मध्य में सीधी सीढ़ी जल पर जाती है। सीढ़ियों के आगे ही दो सुन्दर चबूतरे हैं। इनके ऊपर चबूतरों की छत आई है।

ए जो कही दोए द्योहरी, बीच ऊपर दोए मेहेराब।
तीनों घाट इन विध, सोभित बिना हिसाब।। २५ ।।

यह जो दो द्योहरियां बताई हैं इन दोनों के बीच में दो मेहराब आए हैं। तीनों घाट नौ द्योहरी, तेरह द्योहरी का और झुण्ड का, इस तरह से सुन्दर शोभा देते हैं।

ए जो पावड़ियां घाटों पर, जड़ाव ज्यों झलकत।
अनेक रंगों किरनें उठें, नूर आसमान लेहेरां लेवत।। २६ ।।

तीनों घाटों की सीढ़ियों के जड़ाव झलकार देते हैं। इनमें अनेक रंगों की किरणें उठती हैं। इनकी लहरें आसमान तक जाती हैं।

और सीढ़ियां जो बाहेर की, छात आई लग तिन।
बने छज्जे उपरा ऊपर, ठौर खुसाली खेलन।। २७ ।।

जो बाहर की संक्रमणी सीढ़ियां हैं उन तक पाल की छत आई है। इन बड़े चबूतरों के उपरा-ऊपर पांच भोम तक छज्जे आए हैं। यहां पर खेलने के ठिकाने हैं।

ए घाट अति सोहना, चबूतरे बुजरक।
अति बिराज्या झुन्ड तले, ऊपर छातें इन माफक।। २८ ।।

यह झुण्ड का घाट चबूतरों के कारण ही सुहावना लगता है। नीचे पेड़ों के झुण्ड और उनके ही अनुसार पांच भोम आई हैं।

Nijanand App

जब हक आवत तालको, आए बिराजत इत।
सो खेल जल का करके, ऊपर सौक को बैठत।। २९ ।।

जब श्री राजजी महाराज तालाब पर आते हैं, तो यहां झुण्ड के घाट में जल-क्रीड़ा करके शौक से बैठते हैं।

पीछे तले या ऊपर, रंग भर रूहें खेलत।
ए खुसाली खावंद की, जुबां क्या करसी सिफत।। ३० ।।

पीछे, नीचे या ऊपर उमंग के साथ रूहें खेलती हैं। श्री राजजी महाराज की इस खुशी का वर्णन यहां की जबान से कैसे करूंगी?

कई रंग इन दरखतों, अनेक रंग इन पात।
अनेक रंग फल फूल में, याकी इतहीं होवे बात।। ३१ ।।

यहां पेड़ों में कई रंग हैं। कई रंग पत्ते, फल और फूलों में हैं। इनकी शोभा अति अधिक है।

इन ठौर रेती नहीं, एक जवेर को बन्ध।
खुसबोए नूर अतंत, क्यों कहूं सोभा सनंध।। ३२ ।।

यहां एक हीरे की पाल है। रेती नहीं है। सुगन्धि अत्यधिक है। इसकी शोभा की हकीकत कैसे बताऊं?

पाल हीरे की उज्जल, ऊपर रोसन बन छाहें।
तिनसे पाल सब रोसन, जिमी हरी पाच देखाए।। ३३ ।।

हीरे की पाल अति उज्ज्वल है। यह बहुत चमकती है। उसमें पेड़ों के प्रतिबिम्ब पड़ते हैं जिससे पाल की रोशनी हरे रंग के पाच के नग के समान दिखाई देती है।

ए बन बांईं तरफ का, बन्या दोऊ भर पाल।
देत नूर आकास को, सोभा लेत अति ताल।। ३४ ।।

यह बड़ा वन पाल के ऊपर घेरकर आया है जो आकाश तक झलकार देता है। इस तरह से ताल की शोभा बढ़ जाती है।

अंदर द्योहरियां पाल पर, ऊपर बन बिराज्या आए।
ए सोभा बन लेत है, ए खूबी कही न जाए।। ३५ ।।

पाल के ऊपर एक सौ अट्ठाईस द्योहरियों के ऊपर भी वन की शोभा है जिसकी खूबी कहने में नहीं आती।

ऊपर पाल जो द्योहरी, फिरती आगूं गिरदवाए।
तिन सबों आगूं चबूतरा, तिन दोऊ तरफों उतराए।। ३६ ।।

पाल के ऊपर की एक सौ अट्ठाईस द्योहरियां चारों तरफ घेर कर आई हैं। इन सबके आगे एक-एक चबूतरा है जिनसे दोनों तरफ सीढ़ियां उतरती हैं।

यों द्योहरी सब चबूतरों, तिन सीढ़ियां सबको।
हर द्योहरी हर चबूतरे, सीढ़ियां दोऊ तरफों।। ३७ ।।

इसी तरह से एक सौ अट्ठाईस द्योहरियों के आगे एक सौ अट्ठाईस चबूतरे आए हैं। उन सभी चबूतरों से नीचे सीढ़ियां दोनों तरफ उतरी हैं। हर द्योहरी के चबूतरे से दोनों तरफ सीढ़ियां नीचे भोम पर उतरी हैं।

Nijanand App

दो सीढ़ियों के बीच में, तले चबूतरे द्वार।
तिन सब सीढ़ियों परकोटे, चढ़ती कांगरी दोऊ किनार।। ३८ ।।

दो सीढ़ियों के बीच, नीचे चबूतरे पर चार दरवाजे आते हैं (दो सीढ़ियों में, एक पाल में, एक ताल की तरफ)। इन सब सीढ़ियों में परकोटा लगा है। किनारे पर कांगरी बनी है।

सीढ़ियों पर जो चबूतरे, तिन तले सब मेहेराब।
मेहेराब आगूं जो चबूतरा, सोभित है ढ़िग आब।। ३९ ।।

सीढ़ियों के ऊपर एक सौ अट्ठाईस चबूतरे हैं। उनके नीचे भी एक सौ अट्ठाईस चबूतरे हैं। उनमें एक सौ अट्ठाईस मेहेराबें आई हैं। इन मेहेराबों के आगे जो चबूतरा है वह जल को लगता है, जो पांच सौ मन्दिर का चौड़ा है।

दो दो सीढ़ियों के बीच में, ए जो छोटे कहे दो द्वार।
तिन पर अजब कांगरी, अति सोभित पाल अपार।। ४० ।।

दो-दो सीढ़ियों के बीच में दो छोटे द्वार कहे हैं। उनके ऊपर की कांगरी पाल की शोभा को बढ़ाती है।

पाल ऊपर जो द्योहरी, बीच कठेड़ा सबन।
ए बैठक सोभा लेत है, कहा कहूं जुबां इन।। ४१ ।।

पाल के ऊपर जो द्योहरियां हैं, उन सबों के बीच कठेड़ा लगा है। ऐसी सुन्दर बैठक यहां है जिसका वर्णन यहां की जबान से नहीं होता।

घाट बांईं तरफ नव द्योहरी का

घाट बांईं तरफका, चौथे हिस्से तक।
ऊपर झुंड बिराजिया, अति सोभा बुजरक।। ४२ ।।

बाईं तरफ का घाट पाल के चौथे हिस्से तक चौड़ा है (दो सौ पचास मन्दिर का है)। इसके ऊपर पेड़ों के झुण्ड की सुन्दर शोभा है।

ऊपर बनी नवद्योहरी, फिरते आए तले आठ थंभ।
अदभुत बन्या है कठेड़ा, ए बैठक अति अचंभ।। ४३ ।।

नीचे दोनों चबूतरों के कोने के ऊपर आठ थंभ आए हैं और उनके पड़ाव पर नौ द्योहरियां बनी हैं। यहां बैठक अदभुत है और आश्चर्यजनक है।

उतरती दोए द्योहरी, तिन तले दोए चबूतर।
बीच उतरती सीढ़ियां, तले चौक पानी भीतर।। ४४ ।।

पाल के ऊपर घाट की द्योहरी आई है। इनके नीचे दो चबूतरे हैं। बीच में सीधी उतरती सीढ़ियां हैं जो नीचे चौक में पानी तक जाती हैं।

फेर कहूं इनका बेवरा, ज्यों जाहेर सबों समझाए।
अब कहूं इन भांतसों, ज्यों मोमिनों हिरदे समाए।। ४५ ।।

फिर से इनका ब्यौरा बताती हूं जिससे सभी की समझ में आ जाए। अब इस तरह से बताती हूं जिससे मोमिनों के हृदय में समा जाए।

Nijanand App

पेड़ चार चारों तरफों, छाया सोभा लेत अतंत।
हार किनार बराबर, इत ज्यादा दो दरखत।।४६।।

प्रत्येक चबूतरे पर चारों कोनों में चार पेड़ हैं जिनकी शोभा अनन्त है। किनारे पर एक डोरी (कतार) में है, परन्तु संख्या में यहां दो पेड़ ज्यादा हो गए हैं (पाल के ऊपर जो तीन पेड़ आए हैं)।

नव चौकी का मोहोल जो, ए बड़ी ठौर बीच पाल।
चौथा हिस्सा पाल का, हुई द्योहरी आगूं पड़साल।।४७।।

आगे नौ द्योहरी का घाट पाल के बीच सुन्दर शोभा देता है और पाल के चौथाई हिस्से में पड़साल द्योहरी तथा चबूतरा है।

इतथें उतरती सीढ़ियां, दाएं बाएं दो द्योहरी।
हुए तीनों चौक बराबर, सीढ़ियां इतथें तले उतरी।।४८।।

यहां चबूतरे से उतरती सीढ़ियां हैं जिनके दाएं-बाएं दो द्योहरी हैं। यह तीन चौक बराबर हैं और यहां से सीढ़ियां जल पर उतरती हैं।

द्योहरी तले जो चबूतरे, चौक दूजा याही बराबर।
जल ऊपर जो चबूतरा, आईं सीढ़ियां इत उतर।।४९।।

द्योहरी के नीचे जो चबूतरे हैं। वह भी इसी के बराबर चौड़ाई में हैं। जल के ऊपर जो चबूतरा आया है, घाट की सीढ़ियां उतरकर चबूतरे पर आती हैं।

अब घाट छोड़ आगे चले, क्यों कहूं खूबी ए।
एक छाया सब पाल पर, और छाया पाल से उतरती जे।।५०।।

अब इस घाट को छोड़कर जब आगे चलते हैं तो अत्यन्त खूबी दिखाई देती है। सब पेड़ों की छाया पाल पर बराबर आई हैं और ढलकती पाल पर एक भोम नीचे छाया आई है।

और हार दोऊ उतरती, लगती तीसरी तले बन।
इन विध पेड़ बराबर, गिरदवाए सबन।।५१।।

ढलकती पाल के ऊपर आखिरी दो पेड़ों की हार हैं। तीसरी हार ढलकती पाल पर वन की रोंस की तरफ आई है। इस प्रकार पांचों हारों के पेड़ चारों तरफ घटकर बराबर आए हैं।

डारी लटकी जल पर, पेड़ गिरद द्योहरी हार।
और पेड़ डारों डारी मिली, यों फिरती पाल किनार।।५२।।

इन पेड़ों की डालियां जल पर लटकती हैं। पेड़ भी द्योहरियों की तरह (१२८) आए हैं। पेड़ों की डालियां पाल की किनारों पर आपस में मिलती हैं।

घाट सोले द्योहरी का

जमुना तरफ ताल के, जित जल भिल्या माहें जल।
द्योहरियां इन बंध पर, जल पर सोभित मोहोल।।५३।।

हौज कौसर के पूर्व की तरफ जहां जमुनाजी आकर तालाब में मिलती हैं, उसके बन्ध पर जल के ऊपर सोलह द्योहरी का घाट शोभा देता है।

Nijanand App

तले जाली द्वारें पाल में, जित जल रह्या समाए।
इत बैठ झरोखों देखिए, जानों पूर आवत हैं धाए।।५४ ।।

नीचे जल में चार जालीदार द्वार हैं, जहां से जल तालाब में जाता है। उसके ऊपर चार झरोखों में बैठकर देखें तो लगता है जमुनाजी का बहाव तेजी से अन्दर आता है।

चार द्योहरियां लग लग, चारों तरफों चार चार।
सोले बंध पर द्योहरी, थंभ पचीस पांच पांच हार।।५५ ।।

चारों तरफ चार-चार पंक्ति में सोलह द्योहरी, पांच की पांच हारें (पच्चीस) थंभों के ऊपर आई हैं।

पचीस थंभ ऊपर कहे, तले सोले थंभ गिरदवाए।
सो पोहोंचे दूजी भोम में, भोम बीच की अति सोभाए।।५६ ।।

ऊपर के पच्चीस थंभों के नीचे सोलह थंभ घेरकर आए हैं। यह थंभ दूसरी भोम के बीच सुन्दर शोभा देते हैं।

इत कठेड़ा चारों तरफों, बीच कठेड़ा ओर।
इन बीच चारों हांसों कुंड बन्या, जल जात चल्या इन ठौर।।५७ ।।

इन सोलह थंभों के बीच में जो आठ थंभ आए हैं उनको घेरकर कठेड़ा लगा है और अधबीच वाला थंभ नहीं है। यहां एक चौरस कुंड के समान शोभा है जहां से जल तालाब के अन्दर ही जाता है।

इत खुली भोम जल ऊपर, चारों तरफों बराबर।
चारों हिस्से हर तरफों, आधी खुली जिमी जल पर।।५८ ।।

यहां जल के ऊपर छत खुली है। जमुनाजी के चार घड़नालों में से दो दाएं, बाएं घड़नालों का जल ढका है और मध्य के दो घड़नालों का जल बराबर लम्बाई-चौड़ाई में खुला है।

ऊपर बैठक तले जल, ए जो कह्या कठेड़ा गिरदवाए।
इत आए जब बैठिए, तले जल अति सोभाए।।५९ ।।

ऊपर कठेड़ा के चारों तरफ सुन्दर बैठक है और नीचे जल बहता है। यहां आकर जब बैठते हैं तो नीचे बहते हुए जल की अधिक शोभा होती है।

चारों तरफों कुण्ड ज्यों, इत देत खूबी अति जल।
हाए हाए ए बात करते मोमिन, रूह क्यों न जात उत चल।।६० ।।

यह खुले जल का बहाव चारों तरफ कुण्ड के समान शोभा देता है। हाय! हाय! यहां की बात करने में मोमिनों की अरवाह (रूहें) उड़ क्यों नहीं जातीं?

चार द्योहरी आगूं चबूतरा, तिन तले घड़नाले चार।
तिन बीच चारों झरोखे, करें पानी ऊपर झलकार।।६१ ।।

किनारे की चार द्योहरियों के आगे पूरब-पच्छिम दोनों तरफ चबूतरे हैं जिनके नीचे चार घड़नाले बहते हैं और ऊपर चार झरोखे सुन्दर जल में झलकते हैं।

Nijanand App

आगूं पांच थंभ ऊपर चबूतरा, इसी भांत झरोखों पर।
सोभा लेत चारों झरोखे, थंभ तले ऊपर बराबर।।६२।।

आगे पांच थंभ नीचे-ऊपर झरोखों के चबूतरे के बाद शोभा देते हैं। चारों तरफ पांच-पांच थंभों की पांच हारें आती हैं। नीचे चार झरोखे के पांच थंभ शोभा देते हैं।

ऊपर दोऊ तरफों सीढ़ियां, दोऊ तरफ उतरते द्वार।
इत आया तले का चबूतरा, परकोटे सोभे दोऊ पार।।६३।।

ऊपर दोनों तरफ से ताल में सीढ़ियां उतरती हैं जो जालीदार दरवाजे के दाईं-बाईं तरफ हैं। नीचे जल के ऊपर चबूतरा आया है। दोनों तरफ कठेड़ा लगा है।

जो अंदर चारों घड़नाले, आगूं चबूतरा जल पर।
तले जल जाली बारों आवत, सोभा इन घाट कहूं क्यों कर।।६४।।

अन्दर के चार घड़नालों के जल के ऊपर सुन्दर चबूतरा है। नीचे से जल जालीदार दरवाजों से आता है। इस घाट की शोभा कैसे कही जाए?

सीढ़ियों ऊपर जो चबूतरा, बने चारों झरोखे जे।
इत आगूं सबन के कठेड़ा, अति बन्या ताल पर ए।।६५।।

सीढ़ियों के ऊपर जो चबूतरा है वहां पांच थंभों में चार झरोखे बने हैं। इन सबके आगे कठेड़ा है और आगे तालाब है।

सोभा जल जो लेत है, भर्‌यो नूर रोसन आकास।
बीच लेहेरें लगें मोहोलन को, ए क्यों कहूं खूबी खास।।६६।।

जल की शोभा का नूर आसमान तक फैलता है। बीच में जल की लहरें टापू महल से टकराती हैं। उनकी खास खूबी का कैसे बयान करूं?

खेलत जुदी जुदी जिनसों, इत पांउ ना भोम लगत।
इत खेलें रूहें पाल पर, कई विध दौड़त कूदत।।६७।।

यहां तरह-तरह के खेल खेलते हैं। यहां पांव धरती पर नहीं लगता। सखियां पाल पर कई तरह से दौड़ती कूदती हैं।

ए भोम इन विध की, पाउं न खूंचत रेत।
खेलत हैं इत रूहें, नए नए सुख लेत।।६८।।

यह भूमि इस तरह की है जहां पर रेत पांव को चुभती नहीं है। यहां सखियां खेलकर नए-नए सुख लेती हैं।

आगूं बन इन घाट के, अतंत सोभा लेत।
तीसरे झुंड के घाट में, खेलें खावंद रूहें समेत।।६९।।

इस घाट के आगे की शोभा अपार है। यहां श्री राजश्यामाजी रूहों के साथ में तीसरे झुण्ड के घाट में खेल खेलते हैं।

Nijanand App

घाट तेरे द्योहरी का

द्योहरी चौथे घाट की, देखें पाइयत हैं सुख।
झुण्ड बन्या इन ऊपर, खूबी क्योंकर कहूं इन मुख।।७० ।।

चौथे घाट की द्योहरियों की शोभा को देखकर अत्यन्त सुख मिलता है। उनके ऊपर भी पेड़ों के झुण्ड की शोभा है। उसकी खूबी इस मुख से कैसे कहें?

चौक पर फिरती चांदनी, आठ द्योहरी गिरदवाए।
पांच द्योहरियां बीच में, तले आठ थंभ सोभाए।।७१ ।।

आठ द्योहरियों, आठ थंभों के ऊपर फिरती हुई चांदनी आई है और पांच द्योहरियां आठ थंभों की शोभा देती हैं।

तले फिरता कठेड़ा, चारों तरफों द्वार।
तले उतरती सीढ़ियां, जल माहें करें झलकार।।७२ ।।

चारों तरफ दरवाजे हैं जिनको छोड़कर कठेड़ा लगा है। नीचे उतरती सीढ़ियां जल में झलकती हैं।

जल पर दोए चबूतरे, ऊपर चढ़ती द्योहरी दोए।
आए पोहोंची थंभनको, अति सोभा घाट पर सोए।।७३ ।।

जल के ऊपर दो चबूतरे आए हैं। उनके ऊपर दो द्योहरियां आई हैं जो थंभों के ऊपर शोभायमान हैं। इस तरह से तेरह द्योहरी के घाट की अधिक शोभा है।

फेर इनका भी कहूं बेवरा, ज्यों हिरदे आवे मोमिन।
ए चौथा घाट अति सोहना, सुख होए अर्स रूहन।।७४ ।।

इनका ब्यौरा फिर से बताती हूं जिससे मोमिनों के हृदय में आ जाए। यह चौथा घाट बहुत सुन्दर है और अर्श की रूहों को बहुत सुख देता है।

तेरे चौकी बीच पाल के, आगे पालैकी पड़साल।
गिरद चौकी चार बिरिख की, सोभित झुन्ड कमाल।।७५ ।।

पाल के बीच में तेरह चौकियां हैं और आगे पाल की पड़साल है। चार-चार वृक्षों की एक चौकी आई है जिस पर गुमटियां बनी हैं। ऐसी शोभा इन पेड़ों के झुण्ड की है।

उतरी सीढ़ियां पड़साल से, चौक हुआ बीच इत।
दोऊ चौक दाएं बाएं बने, बीच दोए द्योहरी जित।।७६ ।।

पड़साल से सीढ़ियां नीचे उतरती हैं जहां बीच में एक चौक है और दाएं-बाएं दो चौक हैं जो घाट की द्योहरी के नीचे आए हैं।

इतथें आगूं सीढ़ियां, दोऊ चबूतरों बराबर।
इत चौक होए सीढ़ी उतरीं, तले आए मिली चबूतर।।७७ ।।

यहां से आगे सीढ़ियां दोनों चबूतरों के बराबर हैं। जो ऊपर के चौक से सीढ़ियां दोनों तरफ उतरी हैं, वह नीचे के चबूतरे पर आकर मिलती हैं।

Nijanand App

मोमिन होए सो देखियो, तुमारा दिल कह्या अर्स।
चारों घाट लीजो दिल में, दिल ज्यों होए अरस-परस।।७८ ।।

हे मोमिनो! तुम्हारे दिल में श्री राजजी महाराज बैठे हैं, इसलिए तुम देखना, इन चारों घाटों को चित्त में लेना जिससे तुम्हें अरस-परस दिल लग जाएं।

ए पाल सारी इन भांतकी, कई विध खेल होत इत।
या घाटों या पाल पर, हक रूहें खेल करत।।७९ ।।

यह पूरी पाल इस तरह की है जहां कई तरह के खेल होते हैं। श्री राजजी, श्री श्यामाजी और सखियां कभी घाटों पर और कभी पाल पर खेल खेलते हैं।

खूबी अजब इन बन की, जो बन ऊपर पाल।
द्योहरियां उलंघ के, डारें लटक रही माहें ताल।।८० ।।

यहां वन की शोभा जो पाल पर है बड़ी अजब है उन पेड़ों की डालें द्योहरियों को पारकर तालाब के जल पर लटकती हैं।

ऊपर पाल तलाव के, ऊंचा बन अमोल।
जिनकी लम्बी डारियां, तिनमें बने हिंडोल।।८१ ।।

तालाब की पाल के ऊपर वन की सुन्दर शोभा है जिनकी लम्बी-लम्बी डालियों में हिंडोले लगे हैं।

अंदर किनारे पाल पर, द्योहरियां बराबर।
सोभित किनारे गिरदवाए, अति सोभा सुन्दर।।८२ ।।

पाल के अन्दर किनारे पर (एक सौ अट्ठाईस) द्योहरी आई हैं जो किनारे पर चारों तरफ सुन्दर शोभा देती हैं।

ऊपर बन बुजरक, कई हिंडोलों हींचत।
कई डारी बन झूमत, कई विध खेल करत।।८३ ।।

पाल के ऊपर वन बहुत अच्छे लगते हैं जिनमें हिंडोले लगे हैं। कई डालियां नीचे लटकती हैं जिससे कई तरह के खेल खेलते हैं।

फिरते आए घाट लग, चारों घाट बराबर।
कम ज्यादा इनमें नहीं, अब देखो पाल अंदर।।८४ ।।

सब घूमकर चारों घाटों की शोभा देखकर झुण्ड के घाट पर आ गए। इन सबकी शोभा में कोई कमीबेशी नहीं है। अब पाल के अन्दर की मोहोलातों को चलकर देखो।

पाल अंदर की मोहोलात

आगूं फिरता चबूतरा, हाथ लगता आब।
लग लग द्वार ऊपर बने, जिन बिध होत मेहेराब।।८५ ।।

अन्दर की तरफ एक चबूतरा है जिससे हाथ लगता पानी है और उसके ऊपर मेहराब की शक्ल में दरवाजे बने हैं।

Nijanand App

ताल में द्वार लग लग, पौरें बनी बीच पाल।
झलकत हैं थंभ अगले, सोभा लेत है ताल।। ८६ ।।

तालाब में जो द्वार पास-पास बने हैं उन दरवाजों से पाल के अन्दर जाने के रास्ते हैं और इन मेहराबों के थंभे जल में सुन्दर झांई (झलक, प्रतिबिम्ब) देते हैं।

अब क्यों कहूं पाल अंदर की, कई थंभ कई मोहोलात।
कई देहेलाने कई मंदिर, ए खूबी कही न जात।। ८७ ।।

अब पाल के अन्दर की शोभा का कैसे वर्णन करूं? यहां कई थंभ और महल हैं। कई देहलानें, कई मन्दिर हैं जिनकी खूबी कहने में नहीं आती।

थंभ दोए हारें बनी, अंदर मोहोल कई और।
कई बैठकें जुदी जुदी जिनसों, कहां लग कहूं कई ठौर।। ८८ ।।

पाल के अन्दर थंभों की दो हारें हैं और दो महलों की हारें है। यहां तरह-तरह के सामान के अलग-अलग बैठने के ठिकाने बने हैं।

एह जुगत सब पालमें, गिनती न होए हिसाब।
थंभ द्वार जो झलकत, सो कहा कहे जुबां ख्वाब।। ८९ ।।

पाल की इस तरह की शोभा का हिसाब नहीं है। यहां के थंभ और दरवाजे ऐसे झलकते हैं कि सपने की जबान से कहा नहीं जा सकता।

और सीढ़ियां चारों घाट की, इत दरवाजे नाहें।
तित मोहोलात है अन्दर, बिना हिसाबें माहें।। ९० ।।

चारों घाटों की सीढ़ियां सुन्दर हैं। वहां दरवाजे नहीं है। इसके अन्दर भी मोहोलातें हैं जिनका शुमार नहीं है।

चारों हिस्से ताल के, मोहोल बने इन ठाट।
और झुण्ड ऊपर चारों चौक के, ए जो बने चारों घाट।। ९१ ।।

ताल के चार हिस्से बड़े ठाट-बाट से बने हैं और चारों भागों के ऊपर वन के पेड़ों के झुण्ड चारों घाटों पर शोभा देते हैं।

घाट झुण्ड तलाव के, पावड़ियां तरफ जल।
द्योहरियां चबूतरे, सोभित इन मिसल।। ९२ ।।

इन पेड़ों के झुण्डों के समान जल की तरफ सीढ़ियां जाती हैं जिनकी दोनों तरफ द्योहरियां और चबूतरे शोभा देते हैं।

चौक थंभ कठेड़े, बैठक चारों घाटन।
जो बन खूबी पाल पर, सो क्यों कहूं जुबां इन।। ९३ ।।

चारों घाटों के बीच थंभ, उनके अन्दर लगे कठेड़े तथा पेड़ों की खूबी जो पाल के ऊपर है, उसकी खूबी का बयान यहां की जबान से कैसे करें?

Nijanand App

फेर कहूं पाल ऊपर, जो देखी माहें दिल।
सो कहूं मैं अर्स रूहनको, देखें मोमिन सब मिल।। ९४ ।।

पाल के ऊपर की शोभा का बयान फिर से करती हूं जो दिल में आ रही है। अर्श की रूहों के वास्ते कहती हूं जिससे सब मोमिन उसे देख सकें।

द्योहरी आगूं चबूतरे, खुले झरोखे ताल पर।
सबों बिराजत कठेड़ा, नूर भराए रह्यो अंबर।। ९५ ।।

द्योहरी के आगे चबूतरे झरोखे की तरह ताल पर शोभा देते हैं, अर्थात् चबूतरों पर कठेड़ा लगा है, जिसकी शोभा आसमान में समाती नहीं है।

चारों घाटों के बीच बीच, गिरदवाए द्योहरियां सब।
याही विध आगूं सबों, ऊपर बन छाए रही छब।। ९६ ।।

चारों घाटों के बीच-बीच में चारों तरफ (१२४) द्योहरियां आई हैं और इन सबों के ऊपर पेड़ों की सुन्दर शोभा है।

जो फिरते आए चबूतरे, दोरी बंध बराबर।
ऊपर बन सोभे दोरी बंध, कहूं गेहेरा नहीं छेदर।। ९७ ।।

जैसे जल की तरफ घेरकर डोरी बन्ध चबूतरे आए हैं वैसे ही ऊपर डोरी बन्ध वन की शोभा है, जो कहीं कम ज्यादा नहीं है।

सब खुले झरोखे ढ़ांप के, बन झलूब आया जल पर।
ए सोभा अति देत है, जो देखिए रूह की नजर।। ९८ ।।

सब चबूतरों को ढांपकर वन की डालियां जल पर आकर लगती हैं जिनकी शोभा रूह की नजर से ही देखी जा सकती है।

ऊपर द्योहरी तले चबूतरे, तिन तले सब मेहेराब।
परकोटे तले छोटे द्वारने, फिरता बन सोभे तले आब।। ९९ ।।

ऊपर (१२४) द्योहरियां हैं और उनके नीचे उतने ही चबूतरे हैं जिनके नीचे मेहराब शोभा देती है तथा छोटे-छोटे द्वारों में (१२४) परकोटे (कठेड़ा) लगे हैं। चारों तरफ वन की शोभा के नीचे जल की शोभा है।

आब ऊपर जो चबूतरा, फिरते देखिए छोटे द्वार।
दे परिकरमा आइए, देख आइए घाट चार।। १०० ।।

जल के चबूतरे के ऊपर चारों तरफ छोटे-छोटे दरवाजे आए हैं और उनके चारों तरफ परिकरमा करते हुए चार घाटों को देखो।

महामत कहे मोमिन को, गेहेरा गंभीर जल देख।
टापू बन्यो बीच हौजके, सोभित अति विसेख।। १०१ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! हौज कौसर का जल गहरा और गम्भीर है। उसके बीच सुन्दर टापू की विशेष शोभा है।

॥ प्रकरण ॥ ८ ॥ चौपाई ॥ ५६९ ॥

Nijanand App